









## एकटा विचार क्रान्तिक निराजन आवश्यकता अछि

ई हम कोनो राज्यक निवासी के सही-गलत के प्रमाणपत्र नहिं दृ रहल छी, संगहि सब ठाम निक आ अधलाह लोक रहेत छैक, एहु बात सं परहेज नहिं कयल जा सकेछ, तें एहि बात सभके कियो नकारात्मक अर्थ में नहिं लेब, आ तथापि जं ठिक नहिं लागय तड हमरा क्षमा क्य देब। हम एकटा अनुभव बता रहल छी, दुनू ठामक लोकक एकटा आम स्वभाव जे प्रायः वातावरणे में जेना रचि-बसि गेल होय से बता रहल छी, आ ई एहि लेल बता रहल छी जे, की एहि पर विचार क्य हमहूं सभ अपना आप में परिवर्तन नहिं आनि सकैत छी एहि परिवर्तन काल में?

महाराष्ट्र में प्रायः

प्रत्येक आम जनता में-उदार स्वभाव, आदर्श स्वभाव, हितेषी स्वभाव, कृतज्ञ स्वभाव। अर्थात हम एकटा मानवतावादी आचरण सतत प्रस्तूत करी आ सामनेवाला के ताहि सं प्रभावित करी सबठाम सतत दृष्टिगोचर होइछ। लोक सरकारी बस में चढिते सभसं पहिने टिकट काटय वाला सं संपर्क करत आ टिकट कटाओत, अन्यथा हाथ में पाय निकालि कड राखत जे टिकट काटयवाला के आसानी होय, कहय नहिं पड्य, तथापि जं छुट्य लगैत छैक तड स्वयं आगू बढि क्य अथवा आवाज लगा क्य वा आगुक सहयात्री द्वारा पाय बढा कड उतरितो-उतरितो टिकट कटा लैत अछि आ तखनि जा कड

संतोष होइत छैक। एहिना परस्पर उदार व्यवहार प्रायः कोनो सरकारी/गैर सरकारी संस्थान में बल्कि सबठाम पुरा जनमानस में देखय के भेटत, आपस में अनठियो लोक सं पर्यंत अपनत्व देखय के भेटत। मुदा बिहार में- आक्रामक स्वभाव-

प्रायः सबठाम, जिनका जतय फबि जाय देखय के भेटत, टीकट नहिं कटायब आ दादागिरी सं जायब आ लोक के देखायब जे देखु हमर रुतबा, एतबे नहिं गम-घर, संगी-साथी के बीच में एहि बात के जोर-शोर सं रुतबा के संग बतायब अपन गरिमा बुझैत अछि, आ महाराष्ट्र में एना कियो कइए नहिं सकैछ, अपवाद में जं कियो टिकट

बचाबय चाहल तड लोक ओकरा भुक्खड़ बुझैत अछि, कोनो दोसर सहयात्री टिकट के पाय दृ सहायता क्य दैत छैक, कारण जनता के मोन में ई सतत रहैत छैक जे सरकार के घाटा नहिं लागय के चाही। मुदा बिहार में सब ठाम कार्यालय होय वा कोनो ठाम, माहौले आक्रामकता व जकरा जतय जे फबि जाय ताहि तरहक भेटत, एतय एक मात्र 'वर्चस्व' सबहक स्वभाव बनि गेल छैक, बाकी सबठा मानवता एक तरह सं बुझू समासे छैक, जे छैक से अपवाद बुझि क्षमा करब।

एकटा विचार क्रान्ति के निराजन आवश्यकता अछि।

- जय विचारैत मिथिला

## काशी आ मिथिला के पंचांगकर्ता मतैक्य बना नगर-महानगर में रहयवाला पंडित के लाज बचाउ

काशी (बनारस) सं जे पंचांग निकलैत अछि, ताहू में बहुत रास मिथिला के विद्वत्जन सभ रहैत छी, हमर कहय के तात्पर्य ई, जे व्रत प्रायः उत्तर भारतीय सभ करैत छी, ताहि में कम स कम विचार-विर्मास कड मतैक्य बना पंचांग में नहिं देल जा सकैछ ? कारण खास कड परदेश में रहयवाला पंडित के पराभव भड जाइत छैक, कारण एतय सभ क्षेत्रक लोक रहैत छथि, आ जितिया आदि व्रत सभ सामुहिक रूप सं होइत छैक। आब उत्तर प्रदेश आ बहुत मिथिलावासी काशी पंचांग व ठाकुर प्रसाद वाला अनुसरण करैत छथि, जखनि कि अधिकतर मिथिलावासी दरभंगा सं निकलल विश्वविद्यालय पंचांग। अधिकतर ई देखय में अबैत अछि जे दुनू पंचांग में अलग-अलग व्रत के दिन बताओल गेल रहैत छैक। आब संचार तंत्र ओ टीवी आदि पर अनेरे के पंडित सभ अपन-अपन तर्क दृ लोक के से मतिप्रम में डालि देने रहैत छैक, फलतः पुछनाहो सब प्रकांड पंडित भड गेल रहैत छथि, बुझाबय के प्रयास करब जे फलां दिन वाला ठिक अछि, तड प्रश्नक बौचार भड जाइत अछि, भिन्न-भिन्न पंडितक संदर्भक बौचार भड जाइत अछि ।

किछु कहब पराभव, कारण बाद में किछु ऊंच-नीच भैल तड सेहो पंडिते के दोष :- हम बोले थे जो यही दिन

व्रत होना चाहिए था, परन्तु पंडीजी इस दिन करबाए, अब मोहल्ले के अधिकतर औरतें इसी दिन कर हरी थी, तो हमें भी करना पड़ा अर्थात पंडित कोनो दिन कहयुन, केम्हरो ने केम्हरो सं धरेबे करताह। जखनि की सोचय काल ई नहिं सोचत जे अर्ही टा के ऊंच-नीच किएक भेल, से जं होबय के रहतैक तड आहां संगे जे सभ क्यलक, सभके होइते ने ?

कहय के तात्पर्य ई जे, जे सभ मिथिला में धरातल पर छथि, तिनका सभके तड प्रायः फर्क नहिं पड़त छैनि, सभगोटे प्रायः विश्वविद्यालय पंचांग के अनुसरण करैत एकहि दिन करैत छथि, मुदा बाहर नगर-महानगर में रहयवाला पंडित के भारी द्विवधा भड जाइत छैक, शास्त्र सम्मत दृष्टांत दृ एकटा निश्चित दिन बतायब चाहतै सेहो सभ नहिं मानतै । ओ तड दू बरष सं कोरोना कहि गैदरिंग सं बांचब कहि पूजा-कथा करबिते नहिं छी, जे दिन पुछेत छथि, ओ जतय के रहैत छथि से वाला दिन बता दैत छी, मुदा ताहू में फंसि जाइत छी, आब एकहि सोसायटी में कियो मिथिला सं तड कियो यूपी सं रहैत छथि, दुनू के अपन अपन मान्यता वाला दू दिन बतेलौह, मुदा जखनि दुनू के आपस में गप होइत छनि तड अपन-अपन दिन बतैत छथि, एक सोसायटी में रहय के कारण आब दू दिन बतेलौह, मुदा जखनि दुनू के आपस में गप होइत छनि तड अपन-अपन दिन बतैत छथि, एक सोसायटी में रहय के कारण आब दुनू के

एकहि संग पूजन करय के रहैत छनि, दुनू जखनि आपस में बात क्यलक जे कान पंडित कहलैत तड दुनू के हमर्ही कहने रहैत छियैक, तड आब 'हमरा ई कहलौं, तड हमको ये बताए', कहबै जे सभके अपन-अपन क्षेत्र के हिसाबे कहलौं, तड ऐसे कैसे होगा, सोसायटी में सब को साथ में कथा पूजा करना है, कोई एक दिन बताइ, फिर लोग पंडित के पास क्यों आता है, हमलोग वो सब कुछ नहिं जानते, आप जो एक दिन बताएं उस दिन सब करेगा, बस एक दिन बताइए ? फेर ई कहबै जे एना व्रत करु आ एना पारण, ताहू पर धमधन, मिला-जुला कड सबठा समस्या पंडिते पर आबैत छैक ।

बाहर में जे ई सब भोगैत अछि, सैँह जनैत अछि, पंचांगकर्ता सब तड अपन-अपन पंडित्य देखबैत अलग-अलग मनिषी के वचन उठा अलग-अलग दिन बता दैत छी, कम स कम उत्तरभारतीय एक मत नहिं बना पाबैत छी ।

कृपया कड पंचांगकर्ता सभ सं आग्रह

करब जे, जे व्रत बिहार-उत्तर प्रदेश में समान रूप सं सभ कियो करैत छथि, ताहि व्रत में काशी आ मिथिला के पंचांगकर्ता एक मत बना एकहि टा दिन राखू आ नगर-महानगर में रहयवाला पंडित के लाज बचाउ ।

- सादर

\*\*\*

## चुनौती

सबठा समस्या राजनेता सबहक उत्पन्न कयल अछि, कारण गद्दी हासिल करय के तरीका के कारण कियो वास्तविक समाधान करहै नहिं चाहैत छैक। जं लोकतंत्र में वोटे के मापदंड बना सबठा काजक दिशा-निर्धारण होइत छैक, तड की वोटे के मापदंड बना सबठा सुधार संभव नहिं? निश्चित संभव छैक, बस सोचक एंगल घुमा देबाक छैक, सोच में ई आनि देबाक छैक जे सर्वजन हिताय के लेल एंग क्षेत्र, प्रदेश ओ देशक उच्चतम चहुंमुखी उन्नतिक लेल एहि वोटक प्रयोगक कोन तरीका अपनाओल जाय, आ ई हमरा जनैत एकटा मामूली प्रकृया सं ठिक भड सकैछ आ जं व्यापक सोचक संग सब सोचत तड एहि में किनको दिक्कत नहिं हेबाक चाही, जं टिक्कत हैत तड से कारण आहां सब देखबै जायब आ राखब ।

आ ओ परिवर्तन ई क्य देल जाय जे वोट देबय के अधिकार ओकरे होइत जे कम सं कम पन्द्रहवीं तक शिक्षा ग्रहण कयने होय, अथवा शुरुआत में एकर मापदंड बाहर्हीं सेहो राखल जा सकैत अछि, मुदा वयस २१ रहतै। आब एहि सं चमत्कारी की - की परिवर्तन हैत से देखु :-

१) वोटक अधिकार प्राप्त करय लेल सबठाटे अपन संतान के निश्चित रूप सं पढाओत ।

२) शिक्षा सं मनुष्य में स्वयं सोचन-शक्ति एतै, हित-अनहित बुझत, कियो बडगाला नहिं सकैछ आ सबके स्वयं निर्णय लेबाक सामर्थ्य रहतै जे अपन मताधिकार के समय योग्य के चुनत ।

३) जखनि संतान के जन्म देबाक संग-संग वोटे के अधिकारक खातिर शिक्षित करय के जिम्मेदारी रहतै तड ओतबे संतान के जन्म देत जतबा के ओ शिक्षित क्य सकय, पुनः जनसंख्या दर स्वयं कम भड जायत आ तखनि एकर लाभदायक परिणाम के आंकलन क्य सकैत छी ।

४) ज्ञानक प्रकाश जखनि अंदर समाहित हैत तखनि स्वतः सबठा कुरिते समाप्त होइत, जाति-पाति, वर्ण-धर्म के नाम पर कियो बडगाला नहिं सकैछ, आगि नहिं लगा सकैछ, सब अपन-अपन धर्मों के निबाहैत एक रहत, विकसित देश जंका पुनः लोकक सोच एहि जाति-पाति, वर्ण-धर्म सं आगा बढि समाज निर्माण दिस अग्रसर हैत, देशक उन्नतिक दिस अग्रसर हैत ।

५) सभसं पैद्य बात जे तखनि शिक्षा-दर तेजी सं बढत आ वोटक अधिकारक प्राप्तिक लेल लोकक केंद्र विन्दु शिक्षा बनि जयतैक आ पुनः जनमानस सं लय कड संसद तक सभसं पहिने शिक्षे व्यवस्था के दुरुस्त करय के आवाज उठत, आय जे मुफ्त खरात देबय

सुनै छी एक पर एक सत्यवादी ओ न्यायवादी शासक सबहक एखनि अवतार भारत भूमि पर भेल अछि, की उपरोक्त वास्तविक परिवर्तनक लेल सामर्थ्य अछि जे वोटक अधिकारे में परिवर्तन क्य पुरातन आवश्यक हैत ? ई चुनौती अछि ? आ हं ई परिवर्तन शत-प्रतिशत कारगर सिद्ध होइत सेहो गारंटी अछि, तड की तखनो ई कियो क्य सकैत छी ?

- जय बिलखैत जनता

## विधायक पद



## प्रेरणाप्रद निर्णय

....बौआ विवाह ठिक भड़ गेल, अगिला महिना के २७ तारीख कड़ निश्चित भेल, ताहि हिसाबें अपन छुट्टी बनबा लिअ?

....जी बाबूजी

....पुछलौं नहिं जे कतय किनका सं ठिक भेल?

.....केना बात करैत छी बाबूजी, हम जनैत नहिं छी की जे, हमर हित हमर बाबूजी सं बढि कड़ के सोचि सकैत अछि?

....हं हं तें तड निश्चित सं सबटा निर्णय लेलौं, परुकां साल जे फला बाबू ई कहि चलि गेल छलैथ जे लडका कमाईत नहिं अछि, जाहि पर हम इहो कहने रहियैन जे एतेक निक सं उच्च शिक्षा सफल भेल अछि तड आय ने काल्हि कमेबे करत, तथापि ई कहि चिति गेल छलैथ जे तहिया सोचब, वैऽह दल-बल के संग नेहोरा कय आ अपन गलती सेहो स्वीकार करैत प्रार्थना करय लगलैथ, तड हामी भरि देलौं, दिन तका कड़ सेहो रखने छलाह, हमहूं पंडित जी सं पुछलियनि तड कहलैथ निक दिन छैक।

.... बाबूजी क्षमा करब, मुदा हम ओतय विवाह नहिं करब, एना समाज में गलत संदेश

जयतैक, सब जं एहिना करय लागत तड विवाह किनको समय पर नहिं होयत, एखने तीस-पैंतिस-चालिस पर्यंत औसत चलि

गेल अछि, जखनि गृहस्थी सं निश्चित भड लोकक दायित्व समाज कल्याण दिस अग्रसर हेबाक चाही, तखनि आब लोक गृहस्थी में प्रवेश करैत अछि, एहेन स्थिति में ई समाज कतय जायत, सनातन व्यवस्था में शोधल सभ काजक वयस निश्चित छैक जाहि में मनुष्यक सर्वांगीण जीवनक सफलता निहित छैक, मुदा स्वार्थ वश मनुष्य बहुत गलत रास्ता अखित्यार कय रहल अछि, जे समाज ओ देश के पतनक कारण बनल जा रहल अछि। दोसर बात की लडकाक सबटा क्षमता तखने आंकल जयतैक जखनि ओ कमाई करय लागत, ई सोच मान-सम्मान के सेहो चोट करैत छैक आ समाजक लेल खतरनाक सेहो, सुशिक्षित संस्कारवान लडका सभके चेतय पड़त आ समाज में किछु एहि तरह सं आदर्श उपस्थित करय पड़त जे लोक चेतैथ, तें हमरा आहां जे दंड देब से स्वीकार अछि, मुदा फलां बाबू ओतय हम विवाह नहिं करब...?

- जय जगावैत मिथिला

## जीबय के ढंग ओ दर्रा कोना बदलत?

एतय महाराष्ट्र में हम विशेष रूप सं स्थानीय सभके देखैत छी जे सतत स्त्री-पुरुष के चिंतन एवं यत्न अर्थो पार्जन में तल्लीन रहत अछि। साधारण दिखयवाला सभ प्रायः लखपति- करोड़पति रहत अछि, मुदा तथापि कोनो दिन कोनो ने कोनो विधियें जं किछु उपार्जन नहिं भेल, आमदनी नहिं भेल तड से बर्दाश्त नहिं। केहेन सं केहेन संपत्तिवान व्यक्ति के परिवार में देखब जे पुरुष सभ पैघ-पैघ व्यापार, बड़का-बड़का प्रोजेक्ट पर काज करैत, पैघ-पैघ आफिसर, मुदा स्निग्न तथापि नहिं किछु तड सिलाई-कढाई, सौंदर्य प्रसाधन सं संबंधित काज, एतबे नहिं खेती सं, बाड़ी-झाड़ी सं जं तरकारी, फल आदि जे जखनि निकललै से लड कड बेचय लेल बैस रहत आ जैऽह आबि गेलै से ई संतुष्टि जे आजुक ई आमदनी भेल, कहय के अर्थ जे प्रति-दिन परिवारक सभ सदस्य द्वारा उपार्जन हेबहे के चाही, बचा सभ पढाई सेहो करैत रहत अछि आ क्षमता अनुसार पारिवारिक हुनर सभ सेहो सिखैत रहत अछि, अभिवावक के द्वारा अर्थो पार्जन के काज में सेहो हाथ बटबैत रहत अछि। एतय के लोक में किनको में ई लेशमात्र घमण्ड नहिं जे हम एतेक धन-संपत्ति वाला व्यक्ति छी। बारहो महिना जखनि जे जाहि तरह सं ऋतु अनुसार कमाई के साधन बनैत छैक ताहि प्रकार सं उपार्जन कयल जाइत छैक।

आ अपना सभ दिस समय फालतू में लोक व्यतित कय लेत, मुदा कोनो काज के पहिने स्टेंडर्ड देखत जे ई हमर करय योग्य अछि की नहिं,

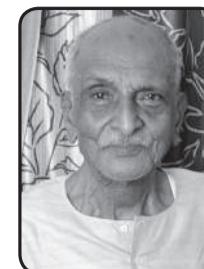
पुनः ई देखत जे एतबा सं की होबयवाला छैक, कोनो मोट आमदनी होइतैक तड सोचबो करितौंह, फुसिये बस फुटानी।

एखनि भरिसक एहि बेर गाम दिस खुब आम भेल अछि, गाछ सभ में लुधकल अछि, जेना फोटो सभ देखैत छी, जं एहि तरह सं एम्हर आम होइतैक तड टिकुला सं लड कड पाकय तक कतेको पाय एतय के लोक योजनाबद्ध तरीका सं बना लैत, कतेक वैज्ञानिक तरीका अपनावैत, जेना अंगुर के लेल करैत अछि वा बाकी फल-सब्जी के लेल करैत अछि, आम सेहो कमोबेश होइत छैक आ तकरो एको टा ककरो गाछ छैक तड तकरा टिकुला सं लड कड पाकय तक छिलका आ गुठली तकक दाम निकालि लैत। चटनी के लेल आम किनैत छी दस टके पाव भेटैत अछि। आ अचार के तड गजबे कहानी छैक, देखैत हेबै पैक अचार बाजार में भेटैत छैक, पैक खोलब तड हरिये आमक कुटबी रहत अछि आ ओहि में जेहेन-तेहेन मसाला देल रहत छैक, मुदा पैक आदि चमकदार रहत छैक एवं प्रचार मशहूर सेठ का मशहूर लोंचे (अचार), फलतः बढिया दाम में बिकाइत अछि। जखनि कि अपना सभ दिसक आचार में कतेक समय लगैत छैक आ कतेक मेहनत सं सबतरहक आचार, कुचा, फारा, कुटबी आदि रंग-विरंगक कतेक स्वादिष्ट बनैत अछि। जं तकरा निक सं मार्केटिंग तरीका सं विक्रय होय तड मिथिला के आचार प्रसिद्ध भड सकैत अछि। मुदा आदर्शवादी लोक (गामे तक मात्र आदर्शवादी) बेचय के दृष्टिकोण सं कोना सोचत,

बस खाय लेल साल भरिक, सर-कुटूंब के देबय-लेबय के लेल प्रयास मात्रा में बनि जाय काफी छैक। हम तड 'स्वक्षेत्री' के योजना के अंतर्गत 'मिथिला संसार' वाला योजना सुझेने रही, मुदा से सब तड सबहक ईच्छा, रुचि आ एहि के तरफ आकृष्ट होयब आ महाराष्ट्र जंका कोनो दिन बिना अर्थो पार्जन के नहिं जाय, से ललक जागत तखने होयत। एखनो एहि आमक ऋतु में जं ढंग सं जे आचार आदि उपलब्ध कराबैथ तड तकर खपत के व्यवस्था कयल जा सकैछ, बल्कि जखनि जे गाम-घरक खाद्य वस्तु अथवा कोनो कुटिर उद्योगक सामग्री उपलब्ध कराबैथ तड स्वक्षेत्री अभियान के अंतर्गत मिथिला संसार सबहक खपत के व्यवस्था करत, मुदा एहि सबहक लेल स्वरुचि वाला आ योजना देखबयवाला, करय वाला बल्कि टीमवर्क के रूप में काज करयवाला लोक चाही, से कतय पाबी, आ किएक एतेक लोक झंझट पालत, जখनि खरातक आदत सरकार लगाइ देने छैक तड किएक नहिं ताहि के लेल टकटकी लगेने रहत आ पोसुआ बनल रहत, बेसी दिक्कत हैतै तड मुंबई-दिल्ली भागत आ ओतय फेर सबटा बबुआनी के ताक पर राखि किछुओ करत, बस एक्टेटा सोच जे एहि ठाम गामक लोक थोड़बे देखैत अछि जे की करैत छी, फेर कमाकड गाम जायब तखनि तड ओहि ठाम मैनेजर कम स कम रहबे करब। तड जीबय के ढंग आ दर्रा कोना बदलत?

- जय झकझोड़ैत  
मिथिला  
\* \* \*

## नोर भरल नयन सं भावपूर्ण श्रद्धांजलि



डॉ रामदेव झा



पंडित चन्द्र नाथ मिश्र अमर



रामलालचन ठाकुर



कुमार गणेश



श्रावण पासवान सहयात्री



आचार्य नार्मिल रिजवी



सुकान्त सोम्पुर



डॉ मानस विहृती वर्मा



डॉ मोहन मिश्र



डॉ हेम चंद्र झा



शेखर झा



रविशंकर चौधरी



मनोज मनुज



अरुण कुमार सिंह



डॉ प्रेमनंद झा



डॉ नवनाथ झा



पुरुषोत्तम नारायण सिंह



डॉ धीरेन्द्र कुमार झा



प्रो. रणजीत कुमार चौधरी



जीवनाथ मिश्र

## झांपल व्यथा

.....की यौ दोस, आहां तड प्रायः नास्तिक रही, वियाहक बाद अद्भुत चमत्कार देखैत छी आहां में, रोज मंदिर आबैत छी आ देवी-देवता के सम्मूख ध्यान पूर्वक टकटकी लगेने रहत छी आ किछु बडबडा कड़ भरिसक मांगितो रहैत छियैन, आहांक कनिया वास्तव में बहुत बुद्धिमान भेटली जे आहां एहेन नास्तिक के आस्तिक बना देलैन, बहुत निक लागैत अछि हमरा, पुछ्य के तड नहिं चाही मुदा दोस्ती के नाते एक बेर पुछि लैत छी, देवी-देवता सं की मांगेत रहैत छी सबदिन?



अखबारक संग दर्शक दीर्घा मे उपस्थित अतिथि लोकनि।



दर्शक दीर्घा मे उपस्थित अतिथि।



मंच पर उपस्थित अतिथि।



सम्पादक बाद मंच पर उपस्थित प्रधान संपादक।



## मैथिली समाचारपत्र के प्रकाशन हर्षक विषय

होटल चंद्रलोक मे मैथिल अखबार के लोकार्पण दीप प्रज्वलित क' धूमधाम सं भेल संपन्न



‘दीप जरा क’ कार्यक्रमक उद्घाटन करैत गणमान्य।

मधुबनी | समदिव्या

मधुबनी मे आई राठी चौक के समीप होटल चंद्रलोक मे मैथिल अखबार के लोकार्पण दीप प्रज्वलित क' धूमधाम सं सम्पन्न भेल आन अपन विचार व्यक्त केला आ जाहिमे पं श्री अजय नाथ झा

शास्त्री, कवि मणिकांत झा, आशीष मिश्र, पद्मश्री श्रीमती दुलारी देवी, एम.एल.सी.वनश्याम ठाकुर, सुमन महासेठ, सीतामढ़ी पूर्णीरा धामक पुजारीजी आ बहुत गोटा उपस्थित भ' मैथिली दैनिक अखबार लेल बहुत धुम धाम सं सम्पन्न भेल

आन अपन विचार व्यक्त केला आ

संगहि प्रोत्साहन देलखिन जे बहुत सुंदर कार्य भेल जे अपन भाषा मे मैथिली अखबार आउत आ घर-घर मे मैथिली अखबार पड्है लेल देल गेलनि। अंतमे उपस्थित भेल सब गोटा अखबासन दैत गेला जे अई समाचारपत्र के हरसंभव हमर सहजेग सदैव रहता। उपस्थित बहुत भीर जुटल छला। उपस्थित सब गोटा के पाग आ डोपरा सं सम्पानित कएल गेलनि। सब गोटाके आजुक मैथिली अखबार देल गेलनि। अंतमे उपस्थित भेल सब गोटा अखबासन दैत गेला जे अई समाचारपत्र के हरसंभव हमर सहजेग सदैव रहता।

मैथिल दैनिक समाचारपत्र लेल बहुत भीर जुटल छला। उपस्थित

सभ गोटा के पाग आ डोपरा सं सम्पानित कएल गेलनि। सब गोटाके आजुक मैथिली अखबार देल गेलनि। अंतमे उपस्थित भेल सब गोटा अखबासन दैत गेला जे अई समाचारपत्र के हरसंभव हमर सहजेग सदैव रहता।



कार्यक्रम के संबोधित करैत वक्ता।



सम्मानित होइत अतिथि।



अखबारक विमोचन करैत अतिथि।



कार्यक्रमक उद्घाटन करैत पद्मश्री दुलारी देवी व अन्य।

## नरपुंगव ऋषि : बाप

डॉ वॉनान्ड झा

सत्याचारी पथ पर चलि कः  
जे कयलनि राष्ट्रक उत्थान ।  
नर पुंगव ओहि महान ऋषिकें  
कोटि-कोटि जन करथि प्रणाम ॥

हिंसक सभ आचार विवर्जित  
लाकमगलक प्रति अनुकृत ।  
अथवाहक चिन्तन आ दर्शन -  
श्वरण-वचन सं रथित विरक ॥

मानव धर्मक पालन हेतु  
कर्मक पथ धर्यलनि निकाम ।  
नरपुंगव ओहि महान ऋषिकें  
कोटि-कोटि जन करथि प्रणाम ॥

भारतवर्षक कति पिरिमिट्या  
रोटी अरय गेला विदेश ।  
संसाधन छल श्रमक शक्ति टा  
दोसर रामक कृपा अरोग ।  
शेष बचल नहिं अनय कयल  
संवर्ध बेस अविरल - अविराम ।  
नरपुंगव ओहि महान ऋषिकें  
कोटि-कोटि जन करथि प्रणाम ॥

पिथिला में चम्पारण सीदति  
तिनकिठाया कुक्षक छल काल ।  
बड़जोरी नीलक खेतो आ  
कराधान सं सुजन बेहाल ।  
कोठावालक गौव ढाहल  
कखनहु की कयलनि आराम ।  
नरपुंगव ओहि महान ऋषिकें  
कोटि-कोटि जन करथि प्रणाम ॥

छूताश्वक भेद मेता कय  
गष्टक एक्यक देलनि मंत्र ।  
शिक्षित, स्वस्थ जनक भारत में  
परदेशी के चलन न तंत्र ।  
विश्व गुरुत्वक पद पयबा में  
सफल भेल पुनि भारत धाम ।  
नरपुंगव ओहि महान ऋषिकें  
कोटि-कोटि जन करथि प्रणाम ॥

## चिंतन

पिथिलाक धर्थी बिन गेल परती ।  
माँ जानकीक जम्म भूमि,  
विद्यापतिक कर्म भूमि,  
आर्यभट्क शून्यक सूजन सं  
सृजित छल,  
सरकारक अभेलना आ,  
हमारा लोकनिक उदासीनता  
सं भेल विरान,

पिथिलाक धर्थी बिन गेल परती ।  
आयुक दौड़ में अपन कर्म सं  
सृजित कयलनि पिथिलाक  
धीया भावना कंठ  
मुदा एखनहु, हिनाने लोल  
हम सब बनल छी चंठ  
आगु बढ़ि सुजन करु  
वीरान भेल धर्ती  
पिथिलाक धर्थी बिन गेल परती ।  
बाढ़िक प्रकोप सं ग्रसित,  
उद्योग, रोजगारक कर्मी,  
नहिं किनको कनियों  
चिंता अहि धरा कैं,  
कानि रहल अछि जर्मी  
पिथिलाक धर्थी बिन गेल परती ।  
विद्या-विवेक में सबर्स आगू  
उजपल धरे-जर पिछलमू नेता  
तैयो भरा उत्साह छथि  
नहिं सपूत भेलनि अपन बेटा  
पिथिलाक धर्थी बिन गेल परती ।  
- देवेंद्र झा

## अनमोल मिथिला

चारर में अरबा,  
चिड़ि में परबा,  
घरहट में सरबा,  
आ बासन में सरबा, के कोनो जोड़ नै ।  
जकालाक भोर,  
अगिलिगक शोर,  
दुश्चिवाक नोर,  
आ झिंगामाक झोर, के कोनो जोड़ नै ।  
बाँसक फराठी,  
कूराशक शितलपाटी,  
जम्पर्यमिक माटी,  
आ भोरका पराती, के कोनो जोड़ नै ।  
बियाहक ढकनचोरी,  
पैजामाक डोरी,  
भिखारिक कटोरी,  
आ गामक होरी, के कोनो जोड़ नै ।  
पागलक बकबक,  
लोहारक ठकठक,  
इजोरियाक इकड़क,  
आ वरेजाक धकधक, के कोनो जोड़ नै ।  
ब्राह्मण में पशुराम,  
देव में श्रीमां,  
धर में गंगाधाम,  
आ पातुक में खराम, के कोनो जोड़ नै ।  
जलखे में दही-चूड़ा,  
भोजन में माछक मूरा,  
जंगल में सत्तूरा,  
आ कुर्ती में उखेल, के कोनो जोड़ नै ।  
- ललित ठाकुर

## कथा

डॉ. सोनू कुमार झा

दुग्गा पजाक चारिम दिन वित गेलै। परसादी लेल एको दिन भौमै नै भेलै। लिल्ली बाला कक्का के ईं बात बड़ अखरलनि। औं आई परसादी बैंटबा काल ध्यान देलनि। किछु ब्रह्मणक बच्चा, किछु कियांद, धारुक आ बिछु जावक बच्चा मात्र अछि। कुजरटोली आ जुलहटोलीक त एककोटा बच्चा नहि अछि। औं देवू भाईसं पुछलखिन- ऐं यो देवू भाई आब परसादी लए कुजरटोली, जुलहटोलीक खस्तान सब नै अबैत अछि।

यो कैकाम आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै। कहावैन आब सक्कर स्वाधीन नै भेलै। लिल्ली बाला कक्का के हाँकी कैद अनलनि दुर्गास्थान।

पनि बेसी दिन टिक्कै नै। लगले हैरै गेलै। सब अपन घर आपस चलि करती। कक्करो कानो तेहन भारी नोकसान नै भेल रहं कक्करो दावा ढाहि गेल रहै। त कक्करो एकचारी लटकि गेल रहै। मुदा खस्तान एकोटा घर नै रहै। खाली महजीद खसि परतै। महजीदों रहै टटप्रधा। केक्का सालसं खुट्टो सब नै वेदलाएल जाहै। जखन सबटा सुखा गेलै। तदू कुजरटोलीमें खिटायी भेलै।

महजीद बनवै के लेला। मिटिमें भेलै। जे आब पक्के महजीद बनाएल जाए। मुदा फेर भेलै जे एतेक पाइ औं औतै करत सं। मिटिंग समाप्त नै भेल रहै। विचार-विमर्श चलिए रहल छलै। की कोम्परो सं गंगू सेवो कुजरटोली दिस गेला। तदू कुजरटोलीमें खिटायी भेलै।

- यो कैकाम आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै। कहावैन आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै।

महजीद बनावै के लेला। मिटिमें भेलै। जे आब पक्के महजीद बनाएल जाए। मुदा फेर भेलै जे एतेक पाइ औं औतै करत सं। मिटिंग समाप्त नै भेल रहै। विचार-विमर्श चलिए रहल छलै। की कोम्परो सं गंगू सेवो कुजरटोली दिस गेला। तदू कुजरटोलीमें खिटायी भेलै।

- यो कैकाम आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै। कहावैन आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै।

महजीद बनावै के लेला। मिटिमें भेलै। जे आब पक्के महजीद बनाएल जाए। मुदा फेर भेलै जे एतेक पाइ औं औतै करत सं। मिटिंग समाप्त नै भेल रहै। विचार-विमर्श चलिए रहल छलै। की कोम्परो सं गंगू सेवो कुजरटोली दिस गेला। तदू कुजरटोलीमें खिटायी भेलै।

- यो कैकाम आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै। कहावैन आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै।

महजीद बनावै के लेला। मिटिमें भेलै। जे आब पक्के महजीद बनाएल जाए। मुदा फेर भेलै जे एतेक पाइ औं औतै करत सं। मिटिंग समाप्त नै भेल रहै। विचार-विमर्श चलिए रहल छलै। की कोम्परो सं गंगू सेवो कुजरटोली दिस गेला। तदू कुजरटोलीमें खिटायी भेलै।

- यो कैकाम आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै। कहावैन आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै।

महजीद बनावै के लेला। मिटिमें भेलै। जे आब पक्के महजीद बनाएल जाए। मुदा फेर भेलै जे एतेक पाइ औं औतै करत सं। मिटिंग समाप्त नै भेल रहै। विचार-विमर्श चलिए रहल छलै। की कोम्परो सं गंगू सेवो कुजरटोली दिस गेला। तदू कुजरटोलीमें खिटायी भेलै।

- यो कैकाम आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै। कहावैन आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै।

महजीद बनावै के लेला। मिटिमें भेलै। जे आब पक्के महजीद बनाएल जाए। मुदा फेर भेलै जे एतेक पाइ औं औतै करत सं। मिटिंग समाप्त नै भेल रहै। विचार-विमर्श चलिए रहल छलै। की कोम्परो सं गंगू सेवो कुजरटोली दिस गेला। तदू कुजरटोलीमें खिटायी भेलै।

- यो कैकाम आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै। कहावैन आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै।

महजीद बनावै के लेला। मिटिमें भेलै। जे आब पक्के महजीद बनाएल जाए। मुदा फेर भेलै जे एतेक पाइ औं औतै करत सं। मिटिंग समाप्त नै भेल रहै। विचार-विमर्श चलिए रहल छलै। की कोम्परो सं गंगू सेवो कुजरटोली दिस गेला। तदू कुजरटोलीमें खिटायी भेलै।

- यो कैकाम आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै। कहावैन आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै।

महजीद बनावै के लेला। मिटिमें भेलै। जे आब पक्के महजीद बनाएल जाए। मुदा फेर भेलै जे एतेक पाइ औं औतै करत सं। मिटिंग समाप्त नै भेल रहै। विचार-विमर्श चलिए रहल छलै। की कोम्परो सं गंगू सेवो कुजरटोली दिस गेला। तदू कुजरटोलीमें खिटायी भेलै।

- यो कैकाम आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै। कहावैन आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै।

महजीद बनावै के लेला। मिटिमें भेलै। जे आब पक्के महजीद बनाएल जाए। मुदा फेर भेलै जे एतेक पाइ औं औतै करत सं। मिटिंग समाप्त नै भेल रहै। विचार-विमर्श चलिए रहल छलै। की कोम्परो सं गंगू सेवो कुजरटोली दिस गेला। तदू कुजरटोलीमें खिटायी भेलै।

- यो कैकाम आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै। कहावैन आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै।

महजीद बनावै के लेला। मिटिमें भेलै। जे आब पक्के महजीद बनाएल जाए। मुदा फेर भेलै जे एतेक पाइ औं औतै करत सं। मिटिंग समाप्त नै भेल रहै। विचार-विमर्श चलिए रहल छलै। की कोम्परो सं गंगू सेवो कुजरटोली दिस गेला। तदू कुजरटोलीमें खिटायी भेलै।

- यो कैकाम आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै। कहावैन आब युग नै छै। आब आ सब नै अबैत छै।

महजीद बनावै के लेला। मिटिमें भेलै। जे आब पक्के महजीद बनाएल जाए। मुदा फेर भेलै जे एतेक पाइ औं औतै करत सं। मिटिंग समाप्त नै भेल रहै। विचार-विमर्श चलिए रहल छलै। की कोम्परो सं गंगू सेवो कुजरटोली दिस गेला। तदू कुजरटोलीमें खिटायी भेलै।

- यो क

अपार हर्षक संग एहि मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश राष्ट्रीय मैथिली दैनिक समाचारपत्र के अनंत मंगलकामना शुभकामना



**सुधीर कुमार झा**  
पाती गोठ (सिंमरही टोल),  
वेनीपट्टी, मध्यवनी

### अभिनन्दन, चंदन, वंदन!

मिथिलाक पावन पुष्प धरा पर चिर प्रतिक्षित राष्ट्रीय मैथिली दैनिक अखबार मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश कड़ लोकार्पण समारोह २६ दिसंबर, रवि दिनको पावन मंगलमय अवसर पर समस्त मिथिलावासीको हार्दिक वधाई आ शुभकामना। सब मिथिलावासी सं उक्तवद्ध आग्रह अछि जे अपने साथ गोठ मिथिलजुलि अपन मातृभाषाक मान बढाऊ आ पाठक बनि मिथिल आ भैयिलीक अलख जगाऊ। आदरणीय युरुजी सं समस्त अभियानीजन एवं अखबारसं जुल ल सहयोगीवृक्षके प्रति आभार एवं अनन्तानन्त शुभकामना।

**शोभा झा**  
गाम-डुमरा, वेनीपट्टी, मध्यवनी

अपार हर्षक संग एहि मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश राष्ट्रीय मैथिली दैनिक समाचारपत्र के अनंत मंगलकामना शुभकामना



**प्रवीण कुमार मिश्र**  
पिता-श्री अमृत नाथ मिश्र,  
गाँव - कहरिया, पोर्ट  
ऑफिस - बरिऔल, दरभंगा

अपार हर्षक संग एहि मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश राष्ट्रीय मैथिली दैनिक समाचारपत्र के अनंत मंगलकामना शुभकामना



**आशा दास**  
(बोकारो) सासूर-विश्वह्य,  
दरभंगा, वैहर : नवानी

अपार हर्षक संग एहि मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश राष्ट्रीय मैथिली दैनिक समाचारपत्र के अनंत मंगलकामना शुभकामना



**प्रियंका दास**  
करमोली, दरभंगा

अपार हर्षक संग एहि मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश राष्ट्रीय मैथिली दैनिक समाचारपत्र के अनंत मंगलकामना शुभकामना



**अशोक कुमार झा**  
हरिपुर मालटोल,  
कलुआही, मध्यवनी

अपार हर्षक संग एहि मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश राष्ट्रीय मैथिली दैनिक समाचारपत्र के अनंत मंगलकामना शुभकामना

अपार हर्षक संग एहि मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश राष्ट्रीय मैथिली दैनिक समाचारपत्र के अनंत मंगलकामना शुभकामना



**उषा चौधरी**  
पति- कर्नल सत्या नन्द  
चौधरी (लखनऊ), बैंगनी

अपार हर्षक संग एहि मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश राष्ट्रीय मैथिली दैनिक समाचारपत्र के अनंत मंगलकामना शुभकामना



**विनय चन्द्र झा**  
वीरसायर,  
पंडौल मध्यवनी

अपार हर्षक संग एहि मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश राष्ट्रीय मैथिली दैनिक समाचारपत्र के अनंत मंगलकामना शुभकामना



**नूतन दत्त**  
किंजे

अपार हर्षक संग एहि मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश राष्ट्रीय मैथिली दैनिक समाचारपत्र के अनंत मंगलकामना शुभकामना



**विजयनन्द भद्हर**  
विरौल, दरभंगा

अपार हर्षक संग एहि मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश राष्ट्रीय मैथिली दैनिक समाचारपत्र के अनंत मंगलकामना शुभकामना



**देवेन्द्र झा**  
पाली, घनश्यामपुर,  
दाङिभंगा

अपार हर्षक संग एहि मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश राष्ट्रीय मैथिली दैनिक समाचारपत्र के अनंत मंगलकामना शुभकामना



उत्कृष्ण वरिष्ठ संरक्षक  
अनिल कुमार



उत्कृष्ण वरिष्ठ संरक्षिका  
रुनू मिश्र



उत्कृष्ण वरिष्ठ संरक्षक  
नवलाकर झा



उत्कृष्ण संरक्षक  
पंकज कुमार कर्ण



उत्कृष्ण संरक्षक  
कृष्ण कान्त झा



संरक्षक  
विजयनन्द



संरक्षक  
उग्र नाथ झा



संरक्षिका  
उमा झा



संरक्षक  
सुधीर कुमार झा



संरक्षक  
नरेश दास



संरक्षक  
नवीन कुमार झा



संरक्षिका  
गायत्री झा



संरक्षक  
जगतसंग झा



संरक्षक  
दीपक आनंद मिश्र



संरक्षिका  
मधु झा



संरक्षक  
मनीष कुमार ठाकुर



संरक्षक  
दीपक ठाकुर



संरक्षक  
अशोक कुमार झा



संरक्षिका  
शोभा झा



संरक्षक  
विक्रम आदित्य सिंह



संरक्षिका  
प्रेमलता झा



संरक्षिका  
तारा झा



संरक्षक  
देवेन्द्र झा



संरक्षक  
कुमार प्रमोद चंद्र



संरक्षिका  
मंजूला ठाकुर झा

अपार हर्षक संग एहि मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश राष्ट्रीय मैथिली दैनिक समाचारपत्र के अनंत मंगलकामना शुभकामना



इंजि. श्री जगन्नाथ झा  
दरभंगा



उत्कृष्ण वरिष्ठ संरक्षक  
उग्रेश कुमार झा



संरक्षक  
आशीष कुमार मिश्र



संरक्षक  
कृष्ण कुमार मिश्र



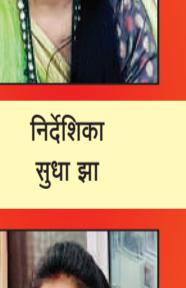
संरक्षक  
गोपाल कुमार झा



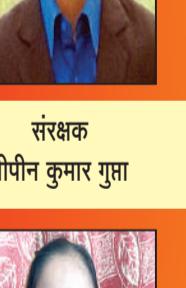
संरक्षक  
जयनन्द झा



संरक्षक  
हेम चन्द्र झा



निर्देशिका  
सुधा झा



संरक्षक  
बीपीन कुमार गुहा



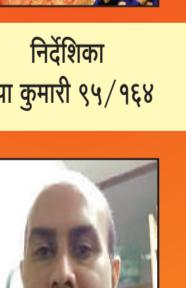
संरक्षिका  
नेहा मिश्रा



संरक्षक  
द्रौपदी गाँवुर



निर्देशिका  
प्रिति कुमारी दास



निर्देशिका  
रुपा कुमारी ९४/९४८



मार्वादिशिका  
बेरी रानी झा



संरक्षक  
प्रवीण कुमार झा



संरक्षक  
प्रदीप गोठ



संरक्षक  
डॉ शिवकान्त झा



संरक्षक  
शं



# परिणीति चोपड़ाक बोल्ड सीन देखि क' कहलनि दर्शक अपन बटन त' बंद क' लिआ' देवी...



मुंबई | बॉलीवुड अभिनेत्री परिणीति चोपड़ा अपन इंस्टाग्राम पर एकटा लेटेस्ट फोटो शेयर कर बॉलीवुड अछि। ऐ फोटो मे परिणीति पूर्ण पूरा बोल्ड नजर आवि रहल छाथि। ऐ फोटो पर हुक्कर प्रारंभक सेहो रंग-बिंगाक कमेंट कर रहल छाथि। किउ दर्शक हुनकर ऐ फोटो के कदम पूहड़ कहि रहल छाथि त' एकटा यूजर लिखित छाथि जे कम से कम अपन बन त' बंद क' लिआ' देवी...। परिणीति चोपड़ा अपन लेटेस्ट फोटोशॉट फिल्मफेयर मैगजिन केर दिसंबर 2021 केर अंक लेल करबॉलीन अछि। फोटो मे ओ ब्लैक आउटफिट मे नजर आवि रहल छाथि। फोटो मे ओ भले ही लोमरस नजर आवि रहल छाथि। फोटो पर ट्वीट करत एकटा यूजर लिखेत छाथि डायरेक्टर साहब हिनका जहर द' दिलौना ओना परिणीति चोपड़ा सं जुडल एकटा नीक समाचार ई अछि जे ओ जिप्टि कलस चैनल पर प्रसारित होम' बला शो 'हुमराज देश की शान' सं छोटिक पर्दा पर डेव्यु कर' बाली छाथि। दिग्जे अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती आ फिल्मफेयर करार जौहर संग परिणीति ए शो मे जज केर भूमिका मे नजर औती। एक अलावा परिणीति सूरज बड़जात्या केर आब' बला सिनेमा 'ऊंचाइ' मे नजर औती। ऐ सिनेमा मे हुक्कर संग सदीक महानायक अमिताभ बच्चन सेहो नजर औती। चलि रहल समाचारक अनुसार परिणीति ए सिनेमा मे दूरिस्ट गाइड केर भूमिका मे नजर औती। ऐ फिल्म मे ओ रणवीर केर विपरीत भूमिका मे नजर औती।



## हम कोनो संघर्षरत युवक के डेट कर' चाहब, कोनो संपन्न व्यक्ति के नहि



दिल्ली | दिसंबर केर शुरुआत मे इजराइल मे आयोजित प्रतियोगिता मे हरनाज संधू द्वारा मिस यूनिवर्स 2021 केर पुस्कर जीतलाक बाद प्राय सभ भारतीय गौत्याचित अछि। हरनाज 20 वर्ष बाद ई पुस्कर भारत आनि सकली आ तहैं मिस यूनिवर्स केर पुस्कर जीत' बाली ओ तेसर भारतीय महिला बने गेल छाथि। 1994 मे सुष्मिता सेन आ 2000 मे लारा दत्त ई पुस्कर घेबा मे सफल रहल छलोह। हरनाज बॉलीवुड मे जेवाव योजनाक संबंध मे गप करैत कहलनि जे ई कहब अखेन हडबडबी है। किएक त' यात्रा अखेन शुरुए भेल अछि।

हम ऐ संबंध निश्चित रूप सं सभ के अपडेट करब। किएक त' आव जे हम निर्णय लैत छी ओ बहुत बूझिमानी भरल आ विचारशील होमक चाही। अहां सभै संबंध मे कोनो तात्क चिंता नहि करी आ शात रही। हरनाज अहां सभ के अपडेट करैत रहत ईंड्या टुडे वेबसाइट सोंग एकटा विशेष साक्षात्कार मे हरनाज संधू अपन बॉलीवुड योजनाक संबंध मे गप केलनि आ मिस यूनिवर्स ग्रैंड फिनाले देट्ज पर होस्ट स्टीव हावे द्वारा पछल गेल गेल अहां के केलनि जे एक वूमन केर भूमिका आैंड करत त' अहां की करब? एक उत्तर दैत हरनाज कहलनि जे किएक नहि, हम एकटा इन बूलित जे महिला सशक्तिकरण केर प्रबल समर्थक छी आ ई हमर दुष्टिकोण छी। हमर एकटा जिद अछि अभियाय। ओ कहलनि जे हमर मनपसंद कलाकार छाथि सुष्मिता सेन, लारा दत्ता आ प्रियंका चोपड़ा। हम दिनका सभ सोंग अभियाय कर' चाहब। अहां कल्मन करी जे एकटा फिल्म महिला सशक्तिकरण सं संबंधित बालाल जावे अछि त' ई करत मजात है। अपन डोटेंटा केर संबंध मे पूछल गेल रोचक प्रश्नक उत्तर दैत हमरा बुझाहत अछि जे हम एकटा संघर्षरत युवा व्यक्तिके डेट कर' चाहब। एक कारण ई अछि जे हम स्वयं संघर्ष करेन छी आ संघर्ष करैत रहब। एक व्यक्तिक रूप मे हमर मानव अछि जे संघर्ष करब बेसरी महत्वपूर्ण अछि। संघर्ष केलाक बाबे हम अपन उपलब्धिके महत्व द' सकैत छी।

## सलमान खान के कटलकनि सांप, फार्म हाउस मे गेल छलाह पार्टी करबा लेल

मुंबई | फिल्म अभिनेता सलमान खान के ल'क' एकटा पैद खबर सोङ्ग आवि अहिँ। सलूक मिया के सांप काटि लेलक अछि। हुनका उपचार अस्पताल लेल अस्पताल पठाएल गेल जत' सं हुनका छुट्टी द' देल गेल। अखेन अस्पताल लेल जनतब केर अहिँ। एक अक्सरहां अबैत रहैत छाथि। ओना ऐ मामला मे अखेन धरि सलमान खानक टीम दिस सं कोनो प्रतिक्रिया नहि आएल अछि।



## पति संग चुंबन लैत रिया कपूरक फोटो भेल वायरल

मुंबई | अनिल कपूरक छोटकी बेटी रिया कपूर केर अभिनेता अकांटर पर खूब सक्रिय रहैत छाथि। रिया अपन सोशल मीडिया अकांट पर अपन पर्सनल लाइफ केर फोटो शेयर करैत रहैत छाथि। हालाहि मे रिद्या अपन सोशल मीडिया अकांटर पर एकटा फोटो शेयर करलनि अछि। ई फोटो सोशल मीडिया पर खूब प्रतिक्रिया आवि रहल अछि। ऐ फोटो मे रिया आ करार चुंबन लैत नजर आवि रहल छाथि। रिया कपूर अही साल 14 अगस्त 2021 केर अपन बॉयफ्रेंड करण बुलानी संग विवाह सेलिब्रिटी फोटोग्राफर विरल भयानी कयने रहेहि।

